आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 29-12-14

हम भाग्यशाली आत्माओं को दो शब्दों, अल्फ और बे का ज्ञान देकर मायाजीत बनाने वाले, बेहद के ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारे पास मनमनाभव और मध्याजीभव के तीक्ष्ण बाण हैं, इन्हीं बाणों से तुम माया पर विजय प्राप्त कर सकते हो.

बाबा ने हम आत्माओं को माया के विकारी इच्छाओं से मुक्त करने के लिए दो शब्दों का ज्ञान दिया है - अल्फ और बे, मनमनाभव और मध्याजीभव, शांतिधाम और सुखधाम. जब हमारी आत्मा इन दोनों स्थानों को याद करती है तो कलियुग की विकारी इच्छाओं से मुक्त हो जाती हैं. माया भी हमें फंसाने के लिए हमारे मन में विकारी इच्छाओं को प्रगट करती हैं. लेकिन उन सभी इच्छाओं से आत्मा ऊपर उड़ जाती है जब उन्हें अपने घर, परमधाम की शांति और सतयुग के सुख की याद आती है, उसके सामने माया द्वारा प्रगट हुई कलियुग की विकारी इच्छा ये टिक नहीं पाती हैं. हमारी आत्मा कलियुग की विकारी इच्छाओं से इच्छा मात्रम अविधा हो जाती है और बाबा के रुहानी प्यार में लवलीन होकर अतिन्दिय सुख को प्राप्त करती है.

मीठे बाबा की प्यार भरी याद में लवलीन हो जाने के लिए, आज की मुरली से बाबा ने कहे कुछ मीठे महा-वाक्यों को निकालकर फिर से पढ़ेंगे.

- मीठे-बाबा ने कहा, बच्चों को सबसे प्रिय हैं माँ और बाप. और माँ-बाप को बहुत प्रिय है तुम बच्चे. अब तुम बच्चे ही जानते हो कि जिसके लिए गाते है त्वमेव माताश्च पिता तुम्ही हो वह बेहद का बाबा आया हुआ हैं. वह आते ही तब है जब की ड्रामा पूरा होता है.

- मीठे-बाबा ने कहा, बच्चे गाते भी है एकोअंकार सतनाम.....अब एकोअंकार यह तो उस एक निराकार परमपिता-परमात्मा की ही महिमा है. वही सच्चा सतगुरु भी है. वास्तव में सारी सृष्टि के सभी धर्मों में महिमा जो भी है उस एक की ही है और कोई की महिमा है नहीं. अभी वही तुम्हें कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य बना रहे है. इन पतित दुनिया में जब बाप आते हैं और जो उनको पहचान लेते हैं वही उन पर कुर्बान जाते हैं.

- मीठे-बाबा ने कहा, तुम मेरे सबसे सिकीलधे बच्चे हो इसलिए सबसे जास्ती लव भी तुम्हें मिलता है. तुम सदा सर्विस पर भी तत्पर रहते हो, रहमदिल भी रहते हो इसलिए बाबा को प्यारे लगते हो.

- मीठे-बाबा ने कहा, तुम मुझे भक्ति में बहुत पुकारते थे! रहम मांगते थे! लेकिन ड्रामा में मेरा पार्ट ही तब होता है जब तुम बहुत तमोप्रधान बन जाते हो. में आकर तुम्हें माया के सर्व दुखों से छुड़ा कर अपने साथ वापस घर ले जाता हूँ. फिर सतयुग के आरंभ में भेज देता हूँ.

- मीठे-बाबा ने कहा, मैं तो सुख-दुख से न्यारा हूँ. हाँ, ड्रामा के अन्त में आकर बच्चों को सदा सुखी बनाता हूँ. सदा शिव गाया जाता है. सदा शिव, सुख देने वाला कहते हैं - मेरे मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे जो सपूत हैं, ज्ञान धारण कर पवित्र रहते हैं, सच्चे योगी और ज्ञानी रहते हैं, वह मुझे बहुत प्यारे लगते हैं.

- मीठे-बाबा ने कहा, अभी तुम स्वयं ईश्वर की औलाद हो. बाप परमधाम से आकर तुम्हें पतित से पावन बनाते हैं. बाबा से तुम प्यार से बातें करते हो तो बाबा भी तुम्हारी बातें सुनता है. बाबा तुम्हें देखते है कि तुम बाप की याद में लवलीन हो जाते हो तो तुम्हारे आंखों से आंसू भी आते है. बाप भी योगी बच्चों को बहुत मदद देते हैं. बाबा ही आकर सुबह तुम्हें उठाते हैं. फिर बाबा तुमको अपने नयनों पर बैठाकर पढ़ाते हैं. बाबा ही तुम्हें स्वर्ग में पहुँचा देंगे.

शुक्रिया बाबा तेरा पदमा-पदम शुक्रिया.

ॐ शांति.

Please provide your feedback / queries to Atma Bhai on email - a.brahmin.soul@gmail.com .